ज्ञान मीमांसा II paper

B.A I (Hons)

बुद्धिवाद

मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है। वह किसी भी विषय ~~का विषय~~ से अनभिज्ञ नहीं रहना चाहता। जब वह विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है तो उसका मस्तिष्क परिपक्व हो जाता है। ज्ञान मीमांसा दर्शन की वह शाखा है जिसमें ज्ञान सम्बन्धी विषयों का विवेचन होता है। इसे प्रमाण विज्ञान भी कहते हैं। सभी प्रकार के ज्ञान सत्य नहीं होते हैं। कुछ ज्ञान सत्य तथा कुछ ज्ञान मिथ्या भी होता है। दर्शन में सत्य ज्ञान को जानने के लिए ही ज्ञान-मीमांसा का सहारा लिया जाता है।

पाश्चात्य दर्शन में ज्ञानमीमांसा अथवा प्रमाण विज्ञान ज्ञान सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करता है। ज्ञान मीमांसा को सर्वप्रथम स्थान दिलाने का श्रेय (Locke) लॉक महोदय को जाता है। यथार्थ ज्ञान की परिभाषा, इसकी विधि एवं इसकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध तीन सिद्धान्त पाये जाते हैं। बुद्धिवाद, अनुभव वाद तथा समीक्षावाद। बुद्धिवाद ज्ञान को बौद्धिक मानता है तथा बुद्धि को ही एक मात्र साधन मानता है। अनुभववाद ज्ञान को अनुभवजन्य बतलाकर बुद्धि का पूर्ण बहिष्कार करता है तथा कान्ट का समीक्षावाद इन दोनों सिद्धान्तों में समन्वय लाने के उद्देश्य से

ज्ञान को अनुभव तथा बुद्धि का संयुक्त परिणाम स्वीकार करता है।

ज्ञान के सम्बन्ध में एक और प्रश्न उठता है कि क्या ज्ञान का विषय ज्ञाता से स्वतंत्र है या ज्ञाता पर निर्भर है? इसके सम्बन्ध में दो मत आते हैं: ① प्रत्ययवाद तथा ② वस्तुवाद

ज्ञान के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि क्या ज्ञान स्वयं साध्य है या साधन। इस तर्क प्रश्न के सम्बन्ध पाश्चात्य दार्शनिकों का मत है कि ज्ञान स्वयं साध्य है ज्ञान ज्ञान के लिए प्राप्त किया जाता है यह अन्य वस्तु की सिद्धि का साधन नहीं हो सकता। लेकिन इसके सम्बन्ध में भारतीय विचारकों का मत है कि ज्ञान मोक्ष का साधन है किसी भी ज्ञान प्रक्रिया में ज्ञाता और ज्ञेय का रहना अनिवार्य है क्या ज्ञेय ज्ञाता पर आश्रित है या उससे स्वतंत्र है? इसके सम्बन्ध में तीन सिद्धान्त बतलाये गये हैं ① प्रत्ययवाद के अनुसार ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता पर आश्रित है (2) वस्तुवाद के अनुसार ज्ञेय ज्ञाता से स्वतंत्र है (3) प्रत्यय-वादी वस्तुवाद के अनुसार ज्ञेय का अस्तित्व कुछ अंश तक ज्ञाता पर है तथा कुछ अंश ज्ञाता से स्वतंत्र है यह विचार प्रत्ययवाद और वस्तुवाद में समन्वय स्थापित करता है।

① बुद्धिवाद — बुद्धिवादियों के अनुसार वास्तविक और सत्य ज्ञान को प्राप्त करना एक मात्र लक्ष्य माना जाता है इस मत के अनुसार

बुद्धि ही ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन है। यह ज्ञान सार्वभौम है क्योंकि यह सभी स्थान तथा सभी कालों में पाया जाता है। यह देश और सभी स्थान में सत्य पाया जाता है

बुद्धिवाद के अनुसार मानव मस्तिष्क हमेशा सक्रिय रहता है (Human mind is alwas active) यह विचार लॉक के मत से भिन्न है बुद्धिवाद के अनुसार मस्तिष्क सक्रिय होकर ही प्रत्ययों को पुनर्गठित करके नवीन ज्ञान देता है बुद्धिवाद का पूर्ण विकास डेकार्ट, स्पीनोजा और लाइबनीज आदि विचारकों के द्वारा हुआ। डेकार्ट के अनुसार बुद्धि द्वारा ही हमें प्रामाणिक और असंदिग्ध ज्ञान मिलता है अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान सदा सत्य नहीं होता है

डेकार्ट का कहना है कि बुद्धि सहज प्रत्ययों से गणित की विधि द्वारा सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान मिलता है।

स्पीनोजा तीन प्रकार के ज्ञान मानते हैं (1) काल्पनिक ज्ञान (2) अनुमानजन्य ज्ञान (3) प्रातिभ ज्ञान काल्पनिक ज्ञान को स्पीनोजा इन्द्रिय से लेते हैं इसलिए के अन्तर्गत इन्द्रिय, स्मृति द्वारा प्राप्त ज्ञान आते हैं अनुमानजन्य ज्ञान और प्रातिभ ज्ञान बौद्धिक ज्ञान को यथार्थ ज्ञान मानते हैं।

लाइबनीज — डेकार्ट की तरह लाइबनीज भी बौद्धिक ज्ञान के समर्थक हैं लेकिन दोनों में कुछ अन्तर है डेकार्ट कुछ प्रत्ययों को जन्मजात मानते हैं लेकिन लाइबनीज सभी प्रत्ययों को जन्मजात मानते हैं ये जन्मजात प्रत्यय प्रारम्भ से हमारे मस्तिष्क में अविकसित रूप में पड़े रहते हैं जब ये विकसित होते हैं तो इनके बारे में जानकारी हो जाती है